

कोटा, राजस्थान में वरिष्ठ जन दिवस पर रोटरी क्लब कोटा द्वारा आयोजित समारोह में भाषण

- आज रोटरी क्लब द्वारा आयोजित विशिष्ट वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान समारोह में आपके बीच आना हमारे लिए बहुत खुशी की बात है। सबसे पहले मैं आप सभी के राष्ट्र निर्माण में अपने-अपने स्तर से योगदान करने के लिए आप सभी का धन्यवाद करता हूँ। आपने जिन परंपराओं, नैतिक मूल्यों एवं संस्कृति को अपना जीवन-मंत्र बनाया है, वास्तव में यह भारत के भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। आप ज्ञान और अनुभव के ऐसे पुंज हैं जिनसे हमें जानकारी और निरंतर मार्गदर्शन मिलता रहता है।
- मैं इस कार्यक्रम के आयोजक रोटरी क्लब कोटा के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल जी तथा अन्य पदाधिकारियों को इस आयोजन के लिए बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ।
- मेरे शहर कोटा में रोटरी क्लब समाज सेवा के क्षेत्र में एक अग्रणी और समर्पित संगठन है। आप सब रोटेरियन ने कोरोना के कठिन काल में कोटा के लोगों की विशेष सेवा की है। चाहे वह सैनेटाइजर, मास्क, फूड पैकेट जैसी जरूरत की चीजें उपलब्ध कराना हो या जनजागृति रैली निकालनी हो। जरूरतमंद लोगों तक ऑक्सीजन पहुंचाना हो या कोरोना की रोकथाम के लिए टीकाकरण शिविरों का आयोजन करना हो आप सबने बढ़-चढ़कर सेवा का व्रत लिया है।
- रोटरी क्लब से लाभान्वित होने वालों में बड़ी संख्या में दिव्यांगजन भी हैं जिन्हें निःशुल्क सहायता उपकरण दिए गए हैं। अभी जनवरी में ही मैंने दो संबल रथों को हरी झण्डी दिखाई थी जिन्होंने कोटा-बूंदी संभाग में प्रत्येक दिव्यांग का पंजीकरण किया था।
- आपकी यह सेवा अत्यंत सराहनीय है और अन्य संस्थाओं के लिए अनुकरणीय भी है।
- साथियों, आज के इस समय में भारत में वरिष्ठ नागरिकों का कल्याण एवं सम्मान बहुत प्रासंगिक है। विश्व में आठ वरिष्ठ नागरिकों में से एक भारत में रहता है।
- भारत में वृद्ध व्यक्तियों की अनुमानित संख्या लगभग साढ़े 10 करोड़ है और अनुमान है कि वर्ष 2050 तक यह संख्या बढ़कर 30 करोड़ हो जाएगी।
- हमारे 70 प्रतिशत से अधिक वरिष्ठ नागरिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं और उन्हें विशेष देखभाल की जरूरत होती है।

- युवा पीढ़ी के बड़े पैमाने पर शहरी क्षेत्रों में पलायन करने या काम की तलाश में दूसरी जगह जाने के कारण बुजुर्गों के सामने आने वाली समस्याएं और गंभीर हो गई हैं।
- उन्हें उपेक्षा, भेदभाव, बेदखली, अकेलापन और दुर्व्यवहार जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- वर्तमान में, बुजुर्गों की कुल जनसंख्या में से 70 प्रतिशत अर्थात् लगभग 8 करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश परिवारों की आय इतनी कम है और वे इतने निर्धन हैं कि अपनी वृद्धावस्था के लिए बिल्कुल भी बचत नहीं कर पाते हैं। उनके पास मौजूद संसाधन उनकी दैनिक जरूरतों को पूरा करने में ही समाप्त हो जाते हैं।
- भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले निर्धन व्यक्तियों से अपनी वृद्धावस्था के लिए लंबे समय वाली बचत योजनाओं में बचत करने की उम्मीद नहीं की जा सकती और वे आम तौर पर ऐसा नहीं करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्गों में गरीबी बढ़ रही है और इस पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।
- सरकार से उन्हें जो पेंशन मिलती है, वह बहुत कम है। हालांकि, हाल में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) योजना लागू होने से बड़े पैमाने पर इस समस्या का समाधान हुआ है, परन्तु अभी भी इस संबंध में बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है। ग्रामीण क्षेत्रों के निर्धन व्यक्तियों को व्यापक रूप से सामाजिक सुरक्षा प्रदान किए जाने की आवश्यकता है।
- साथियों, मेरा यह मानना है कि वरिष्ठ नागरिकों में भी हमें बुजुर्ग महिलाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वर्ग, जाति, निःशक्तता, निरक्षरता, बेरोजगारी और वैवाहिक स्थिति के आधार पर होने वाले सामाजिक भेदभाव के कारण समस्याएं और जटिल हो जाती हैं।
- संविधान के अनुच्छेद 41 में कहा गया है कि राज्य अपने आर्थिक सामर्थ्य और विकास की सीमाओं के भीतर बुजुर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा अर्थात् वृद्धावस्था में सरकारी सहायता के अधिकार के लिए प्रभावी उपबंध करेगा।
- संविधान द्वारा समानता के अधिकार की गारंटी एक मूल अधिकार के रूप में दी गई है। सामाजिक सुरक्षा केन्द्र और राज्य सरकार - दोनों की जिम्मेदारी होती है।

- भारत में ज्यादातर लोगों की उम्र 30 साल से कम है, इस कारण से यहाँ बुजुर्गों की समस्याओं और उनके जुड़े मुद्दों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। परंतु हमें यह ध्यान में रखना है कि एक अंतराल के बाद ये युवा प्रौढ़ बनेंगे। अतः, हमें अभी से उनकी देखभाल के लिए बेहतर इन्फ्रास्ट्रक्चर और स्वास्थ्य सेवाएं तैयार किए जाने की भी आवश्यकता है।

- यह सच है कि राष्ट्र का तीव्र विकास सुनिश्चित करने एवं demographic dividend का लाभ उठाने के उद्देश्य से हम मुख्य रूप से बच्चों, युवाओं तथा उनकी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान दे रहे हैं। परंतु हमें अपने वरिष्ठ नागरिकों का भी उतना ही ध्यान रखना है क्योंकि वे ज्ञान और अनुभव के असीम भंडार होते हैं।

प्रिय बहनो, भाइयों और वरिष्ठ नागरिको,

- भारत की ताकत यहाँ की संयुक्त परिवार प्रणाली, एक-दूसरे के लिये प्यार, भाईचारा और स्नेह है। 'मिल-जुल कर रहना और एक-दूसरे का ख्याल रखना' ही परिवारों को एक साथ जोड़ कर रखने का आधार है।

- संयुक्त परिवार बुजुर्गों के लिए एक पारम्परिक सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा प्रणाली की तरह काम करते रहे हैं। परंतु, सामाजिक और आर्थिक परिवेश में तेज़ी से हो रहे बदलावों के कारण लोग शिक्षा प्राप्त करने, रोजगार के अवसरों की खोज करने और विवाह के कारण भी बहुत से संयुक्त परिवार धीरे-धीरे टूटते जा रहे हैं और वे एकल परिवार में बदल रहे हैं जिसके कारण एवं परिवार के सदस्यों के बीच बढ़ते अलगाव के कारण बुजुर्गों को भावनात्मक, शारीरिक और वित्तीय असुरक्षा का सामना करना पड़ रहा है।

- अब सिर्फ अपने बारे में सोचने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है और बुजुर्ग तेज़ी से उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं, जिससे उनके कल्याण और सम्मान पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

- यही सच्चाई है और इसे बदलने के लिए हमें नैतिक रूप से ठोस कदम उठाना होगा एवं ऐसी संस्कृति विकसित करनी होगी जिसमें बुजुर्गों का सम्मान हो, उन्हें आदर मिले।

- केन्द्र और राज्य सरकारों के स्तर पर नीति-निर्माताओं तथा प्रशासकों, स्वसंयंसेवी संगठनों एवं सिविल सोसाइटी का ध्यान इस ओर गया है।

- हमें किफायती स्वास्थ्य देखभाल, बीमा, व्यक्तिगत सुरक्षा, दुर्व्यवहार से बचाव, बहु-उद्देशीय डे केयर केन्द्रों की स्थापना, वृद्धजन गृहों की व्यवस्था, अस्पतालों में बुजुर्गों के लिए वार्डों की व्यवस्था और परित्यक्तों के लिए आश्रयों के निर्माण पर ध्यान देना चाहिए।

- इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए संसद द्वारा माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007 पारित किया गया है जिसे और अधिक प्रभावी तरीके से लागू करने की आवश्यकता है।
- इसके साथ ही हमारे अस्पतालों में बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं का विस्तार करने की ज़रूरत है। इस संबंध में आयुष्मान भारत योजना एक प्रभावी योजना है जो बुजुर्गों को किफायती दरों पर इलाज उपलब्ध कराती है।
- यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपने बुजुर्गों को अपेक्षित शारीरिक, वित्तीय और सामाजिक सुरक्षा और सम्मान प्रदान करें। बुजुर्गों का जीवन आरामदेह और सम्मानजनक होना चाहिए। बुजुर्गों के लिए ज़रूरी है कि वे सक्रिय रहें और किसी-न-किसी काम से जुड़े रहें।
- रिटायरमेंट के बाद काम करने के इच्छुक लोगों को काम के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। यह बुजुर्गों को बढ़ती उम्र में भी सक्रिय और उत्पादक बनाए रखने का सुनिश्चित तरीका है।
- मित्रो, भारत तेज़ी से आर्थिक प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। हमारी गिनती तेज़ी से बढ़ रही अर्थव्यवस्थाओं में होती है। यह प्रगति समावेशी होनी चाहिए। विकास के बारे में गांधी जी का विचार “अंत्योदय के द्वारा सर्वोदय” का था।
- आगे चलकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे नेता भी इस विचार से प्रभावित हुए और यह विचार आज के संदर्भ में और भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो गया है। अंत्योदय का अर्थ समाज के कमज़ोर वर्गों का उत्थान है और सर्वोदय का व्यापक अर्थ सभी का विकास करना है। एक बार जब अर्थव्यवस्था में सुधार आ जाता है तो सरकार को सामाजिक सुरक्षा के लिए प्राथमिकता देनी चाहिए।
- मुझे विश्वास है कि अर्थव्यवस्था में सुधार के साथ-साथ सरकार और अधिक सामाजिक सुरक्षा उपायों को लागू करेगी।
- मित्रो, हमारी सभ्यता ऐसी रही है कि हमें अपने बुजुर्गों के साथ अच्छा व्यवहार करने पर गर्व होता है। हमारे शास्त्रों के अनुसार बुजुर्गों की सेवा करने वाले की आयु, विद्या, यश और बल में हमेशा वृद्धि होती रहती है एवं उनका चित्त हमेशा प्रसन्न रहता है। हमने हमेशा अपने बुजुर्गों को समाज में सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानजनक स्थान दिया है।

- मैं युवा पीढ़ी से अनुरोध करता हूं कि वे अपने माता-पिता का ध्यान रखें; क्योंकि जब आप बूढ़े हो जाओगे तो आपके बच्चे आपका ध्यान रखेंगे। यह प्रकृति का नियम है कि एक दिन सभी बूढ़े होते हैं। अपने माता-पिता, अपने बुजुर्गों की देखभाल करना हमारा परम कर्तव्य है। इसी संस्कृति, मूल्य और परंपरा पर हमें गर्व है।
- इसे कानून बनाकर लागू नहीं किया जा सकता, बल्कि विचारों में परिवर्तन लाकर बदला जा सकता है और इसी से अपने बुजुर्गों की देखभाल करने की हमारी यह परंपरा हमेशा बनी रहेगी।
- मैं रोटरी क्लब, कोटा द्वारा यहां सम्मानित किए जा रहे सभी वरिष्ठजनों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि आप सबका मार्गदर्शन रोटरी क्लब को पहले की तरह मिलता रहे। आपके अनुभवों से सभी लाभान्वित होते रहें। मैं आप सबके स्वस्थ, खुशहाल, सार्थक तथा उद्देश्यपूर्ण एवं ऊर्जा से भरपूर जीवन की कामना करता हूं।
- जय हिन्द।
